

२७ कादि संप्रति एव कृता ह्यहं समाचरन् ॥ सद्यः वपि नृहा सखा
मातृप्रातृविनाशकः ॥ मृताहं पार्वती कुर्वन्तगोऽप्यतिमान
वः ॥ संपुक्कं व्याकूलीरावः पुनः वृत्रयगोहवेदिति मात्स्यः ॥ ॥
एतन्नीपुमध्वमं विष्णुमाहायदिनयाचिता ॥ आवलपितनाग
हं मामसक्तानवद्धेनं ॥ मात्स्यः ॥ ॥ पिच्छं मुग्धं वृत्रयादयाद
एतं जलपिना ॥ मात्स्यः ॥ ॥ शुभम् ॥

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पाकश्राद्धविधिरिति ॥ नृणां च वृत्तिकानि
 मर्त्येभ्यः ॥ ॐ अथादि ॥ यजमानस्य पितृबुद्ध्या उवाच ॥ पित्रोः सवित्री कन
 ताश्राद्धं वृत्तिकामिच्छा पननिमित्तार्थं श्रीसूर्याया ध्या नमः ॥ ॐ आ क
 क ॥ रात्कनाय पुष्पं नमः ॥ ॥ गन्तुं नमस्को न न्यासा ध्या पाण्डुजात्म
 पूजां च ॥ ॥ गायत्री मन्त्रं च वृत्तिनिर्वाहार्थं ॥ ॐ यद्वा दव हउ नंद
 वासश्च कमा वयस ॥ अग्निर्मातस्मादनसा विष्वा न्मृकृत्व ० ह
 सः ॥ ॥ पतिसमूहर्तु ॥ ॐ मानसो क ॥ ॥ उपलपनं ॥ ॐ त्वामिच्छि

हवामहं सा गोवाकस्य कात्रवः ॥ त्वा वृत्तं विन्दुसत्यनिं नृजस्वाका
 वा सर्वतः ॥ ॐ अथर्वनी ॥ ॐ गत्वा यामिति ॥ ॥ अथर्वनी ॥ ॐ अथर्व
 कः ॥ समीगर्ह स्वयमवदूतासनः ॥ नखा चतुष्टयं कृत्वा ग
 यत्री विन्यसद्बुधः ॥ ॥ अथर्वक निधाय ॥ ॐ सदसस्पतिमहू
 तं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ॥ समीक्षधामया सिष ० स्वाहा ॥ ॥
 नक्षत्रान्यप्रक्षपत् ॥ ॐ वीहयश्मम् ॥ ॥ कृष्णसर्प ॥ ॐ देवस्य

त्वा ॥ **॥ चकार सन ॥** उं ग आ सि ॥ ॥ **काष्ठग्रह** ॥ उं ली व रु धि नु स
स्य नि न न स्त्वा का वा स वी ग ॥ स त्व न न षि ग व द ह स धृ षु याम ह
सु वा ना ॥ **॥ अदृव ॥** ॥ **काष्ठनिधाय** ॥ उं ॐ न्वा ना स्त्वा ॥ ॥ **काष्ठ**
कृष्णयुजन ॥ उं स र्वा का दि स फ य र्थ ग ॥ उं मृ त व र्त्त ति ॥ ॥ **अ**
ग्निं प द्वा त्वा ॥ उं अग्नि मूर्द्धा ॥ ॥ **गयथा जयतु** ॥ क द्या दाग्निं प
नित्य श्च ॥ **धेनुमूढा मृगी कृत्वा** ॥ **ग्निं गृहीत्वा** ॥ उं अ न्वग्नि न्

वसामग्रम दध न्वहानि पृथग्भा जात वं द ॥ **अनुरूप्यस्य** प
रुगा च न ष्मी न न्वा वा पृथिवी ॥ **अतु न्वा** ॥ **विपुदक्षिणी कृत्य** ॥
वाक् ॥ यजमानस्य पि तु र्द ष षा उ षा यि लु स पि लु क न ल
॥ **अचूला मिक्तापनसू** र्द र्द म म् ॥ उं म यि गृ द्वा म् य ॥
अग्नि ॥ **वायस्य** वा य स्र प जा त्वा य स्र वी र्या य ॥ **मामूदवना** ॥
सचका ॥ **स्वस्ति स्वाहा** ॥ ॥ **उं स्वस्ति ना मिमीता ॐ** त्यादि ॥ ॥

चतुर्वेदासनं॥ॐ ह्रस्वदायॐ दमासनं नमः॥ॐ अक्षर्वदायॐ
दमासनं नमः॥ॐ सामवेदायॐ दमासनं नमः॥ॐ अथर्व
वेदायॐ दमासनं नमः॥ॐ अग्निमीडे प्राहितं यदस्य द
वमृषूजम्॥ हाता न तन्नि धनम्॥ॐ ॐ वत्सार्जुनं वायवस्क
दवावः सवित्ताप्यार्ययतुष्टु तमाय कर्मणः॥ अथाय
मग्नाः॥ॐ द्यायरागस्य जावती नलमीवाः॥ अयम्मा माव

३

स्तनः॥ॐ गीतमाघण० साकृवाः॥ अस्मिन्नापतो स्यात्तव द्वीप्य
जमानस्य यन् न्याहि॥ॐ अग्नः॥ अथाहिवीतय गृहानाहव्यदा
तय॥ निहाता सत्सिवहिषि॥ॐ अनादवीनरिषूयः॥ अथा
वन्तुपीतय॥ अथा नरिषूवन्तुन॥ चतुर्दिगं अक्षपातनीं॥
दक्षदिग्मात्तार्चनीं॥ॐ ॐ द्यायनमः॥ॐ अग्नये॥ॐ अमाय
रा॥ॐ अनेजृष्याय॥ॐ अत्रूणाय॥ॐ वायवे॥ॐ कृवनाय॥ॐ

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ जूधसं ॥ ॐ उर्दीय ॥ ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥
 कालीपाय नमः ॥ ॐ जूधसं ॥ ॐ उर्दीय ॥ ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥
 लूक ० नर ० पुण्ड्र ० ॥ ॐ जूधसं ॥ ॐ उर्दीय ॥ ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥
 तय ॥ ॥ सैमा ० ॥ ॐ जूधसं ॥ ॐ उर्दीय ॥ ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥
 ॐ ध्यायेत्सन्मार्गम् ॥ ॥ धृतिनिधाय ॥ ॐ महीनाय नमः ॥ ॥ ग
 गनस्थ नृपाय नमः ॥ ॐ ध्यायेत्सन्मार्गम् ॥ ॥ धृतिनिधाय ॥ ॐ महीनाय नमः ॥ ॥ ग

४

यत्वाद्यानाय नमः ॥ दीर्घमनूषसितिमायूषधन्वं वाव ० सविता
 दिनस्य दालि ० पुतिगृजा त्वच्छिंदलयाणि नाच कूषत्वो मही
 नामययासि ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥ ॐ जूधसं ॥ ॐ उर्दीय ॥ ॥ गगनस्थ नृपाय नमः ॥
 ध्यायेत्सन्मार्गम् ॥ ॥ धृतिनिधाय ॥ ॐ महीनाय नमः ॥ ॥ ग
 ॐ कू कूटामिमधुजि ० ॐ ध्यायेत्सन्मार्गम् ॥ ॥ धृतिनिधाय ॥ ॐ महीनाय नमः ॥ ॥ ग
 ध्यायेत्सन्मार्गम् ॥ ॥ धृतिनिधाय ॥ ॐ महीनाय नमः ॥ ॥ ग

[illegible]

केशवपायश॥ उं जूययं॥ उं वृक्ष॥ उं विष्णुव॥ उं महेश्वनाय
नमः॥ चन्द्रपाशकालीकृतुजुधिषायन॥ उं वृषत्योर्जुत्या॥
चन्द्रपाशकृतुनववृषय॥ ॥ दर्वीश्रुवाजलनसिद्धय॥ उं
दवत्यत्वा॥ ॥ प्रतप्यं॥ उं प्रत्युक्त॥ ॥ कृतुनसिद्धा
र्जन॥ उं जूनिसिगासि॥ ॥ दर्वीनाचन्द्रमात्रा॥ उं गंगा
नमिन्दु॥ ॥ श्रुवंनघृतमात्रादनी॥ ॥ गंगाघृतादुतिंका

[illegible][illegible]

गवर्णाय स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ साम वंदाय स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ हूर्या
य स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ दिव स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ नक्त वर्णाय स्वाहा ॥
ॐ दै ॥ ॐ अथर्व वंदाय स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ दिग्य ४ स्वाहा ॥ ॐ
दै ॥ ॐ वसुमस स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ कृष्ण वर्णाय स्वाहा ॥ ॐ दै ॥
ॐ अश्विन स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ मध्या स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ पुष्कर
स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ अत्रि स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ सदसस्य नय

स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ अनुमनय स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॥ महावाहन ॥ ॐ दै ॥
स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ श्रव ४ स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ स्व ४ स्वाहा ॥ ॐ दै ॥ ॐ दै
व ४ स्व ४ स्वाहा ॥ ॥ यश्रवा नृ ॥ ॐ त्वे नो ॥ ॐ अ न व नृ ॥ ॐ त्वे वि
द्वान्द व स्य ह ॥ ॐ अ व या सि सी ॥ ॐ अ जि क्वा वि द्मि त म ॥
ॐ द म ग्नि षा मा त्या ग ॥ १ ॥ ॐ स त्वे नो ॥ ॐ अ न व मा र व

ती नदि क्षोऽ जस्याऽ उवसा ब्रूक्षी ॥ अवेय कृना वनूण ० नया क्षी
 वी हिमृ जी क ० सहवा नऽ अधि स्वा हा ॥ ॐ दमनी वनू लम स्या त्याः
 ग ४ ॥ २ ॥ उं जया श्या ग्न स्य न रि ० सि पा श्य स स्य मि त्व मया
 जसि ॥ जया ना य ऊ व हा स्य या ना धि हि रे म ऊ ० स्वा हा ॥ ॐ द
 मया श्या ग्न त्या ग ४ ॥ ३ ॥ उं य न ० न व नू ली य स ह मृ य क्रि या
 पा ० न वि त ता म हा न ॥ ग रि न ० जय प धि मा थ वि षू वि ०

मू ऋ तु म नू त ० स्व की ० स्वा हा ॥ ॐ द व नू लम या स वि षू वि षू व वि
 ० य ० द व ० यो म नू ल ० स्व की ० त्या ग ४ ॥ ४ ॥ उं उ दू र्म व नू
 ल या ० न स द वा ध म वि म षू म ० थ था य ॥ अ थ व य मा दि
 य व नू ग वा ना ग सा ० अ दि त श स्या म स्वा हा ॥ ॐ द व नू लम या
 दि त्या धि प त श त्या ग ४ ॥ ५ ॥ ॐ ति प षू व नू ली ॥ ॥ उं दू र्म
 व ० स्व ० व नू ली स्वा हा ॥ द न य षू ग य वा ॥ न व ० प ली त ० व द ०

लोकपाल. कलशमदि. नाग. यद. यदली. श्री. लक्ष्मी. सूर्यादयः
 सर्वस्यादवस्य स्वाहा ॥ **॥ पूर्ण ॥** उंसफ गऽ अग्र ४ समिध ४ सफ
 जिह्वा ४ सफऽ जृषयः ४ सफ धाम प्रियाणि ॥ सफ हागा ४ सफ
 धात्राय जनि सफ यानि नापृण स्व घृण न स्वाहा ॥ **ॐ निघृ**
ताद्रुति पूर्ण ॥ ॥ गतसिला इति का नयन् ॥ वीहि पाया स्य द
 ली ॥ उंसदवस्य स्वाहा ॥ **॥ प्रनयनी ॥** प्रत्यक्ष ० न दऽ प्रत्यक्षऽ ज

नागयानि ह्रफु ० न दऽ निह्रफाऽ जनातय ४ ॥ **॥ कलनसंमा**
जनी ॥ उंसजनि सितासि सपत्नि दिवा जिन स्वा वा जं च्या ये संमा
 डिर् ॥ ॥ **वीहि पाय वीहि निधाय ॥** वीहि हामयन् ॥ उंसद्वैव ४
 स्व ४ वृक्ष जे स्वाहा ॥ उंस वृक्ष यज्ञानं ॥ ॥ प्रणीताय स्वाहा ॥ उंस
 दविष्णु ४ ॥ उंस कृष्णदाय स्वाहा ॥ उंस शर्वदाय स्वाहा ॥ उंस सामे
 वेदाय स्वाहा ॥ उंस अथर्वदाय स्वाहा ॥ उंस वेदासि यन लव नंदव

वंदे वंद्या वंदार वक्तु नमस्कृतं वंदार याः स्वाहा ॥ ॐ नमो भू-
 य स्वाहा ॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा ॥
 ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥ ॐ कृत्वाय स्वाहा ॥ ॐ ऋ-
 णाय स्वाहा ॥ ॐ अधस स्वाहा ॥ ॐ उद्धाय स्वाहा ॥ ॐ गान्धर्वाय स्वाहा ॥
 नमो विनायकानिन्दु ० ह वै ह व स ह व ० ० नमिन्दुम् ॥ ह्यामि
 ण क्रम्य नूतनमिन्दु ० स्वस्ति नाम धवा धास्विन्दु ० स्वाहा ॥

१०

कलशाय स्वाहा ॥ ॐ अजिग्य कलशं मन्त्रावा विष्णुस्विन्दुव ॥
 पुन नूतनमिन्दु स्वसान ० सहस्र नूतनमिन्दु नूतनमिन्दु नूतनमिन्दु
 नमो विष्णुगदुयि ० स्वाहा ॥ ॐ नागाय स्वाहा ॥ ॐ नमो भू-
 य स्वाहा ॥ ॐ अकृति नूतनमिन्दु ० अदि विनय ०
 यस्विना नम ० स्वाहा ॥ ॐ यकाय स्वाहा ॥ ॐ अने ० अन्नाव
 दहन ० यतिन ० सुमनाय स्वाहा ॥ ॐ नमो भू-
 य स्वाहा ॥ ॐ अकृति नूतनमिन्दु ०

हि धनदाऽऽसि स्वाहा ॥ ॐ यक्षस्व स्वाहा ॥ ॐ पुनो यक्षस्व स्वाहा ॥
 मा पुपूषा पुपूष हस्यति ॥ प्रवाग्दवी ददातु नः स्वाहा ॥ ॐ
 श्रिये स्वाहा ॥ ॐ पावकानः सनस्वती वाङ्महि वीजिनीवती ॥
 यक्षवधुधिया वसु ॥ ॐ लक्ष्मि स्वाहा ॥ ॐ श्रीष्टुत ॥ ॐ ह
 र्योदय स्वाहा ॥ ॐ आरुद्र ॥ ॐ सर्वस्वा दक्ष स्वाहा ॥ ॐ वि
 श्वगन्धर्व नूतविश्वगा मूर्खा विश्वगा वाङ्महि नूतविश्वगस्यात् ॥

११

सम्प्राकृत्यान्धमगि सम्प्रागुर्गवात्तुमीजनस्यन्दवऽनुक ॥
 पूर्व ॥ ॐ पूर्वोदविपनापतसुपूर्व पुनरापत ॥ वसुविवित्री
 भावहा ॥ ॐ वसुर्ज ॥ ॐ गक्रगा स्वाहा ॥ ॐ गिनिनाकृतिपूर्व
 ॥ ॐ वसुनिष्ठा ॥ ॐ पिगृह्य ॥ ॐ स्वधायित्य ॥ ॐ स्वधनम ॥ ॐ पिताम
 हस्य ॥ ॐ स्वधायित्य ॥ ॐ स्वधनम ॥ ॐ प्रपितामहस्य ॥ ॐ स्वधायित्य ॥
 स्वधनम ॥ ॐ अकृन्वितनामी मदकपितनामी नृपकपितनः

पितॄन् ४७ न्ध्वं ध्वमस्वाहा ॥ ॥ सूर्या इति १० ॥ ॐ अंसूर्यातासह
 प्रालिखन् २५ ॐ अविहृम्या ॥ तं वा ५ सहप्रयां जनं वधन्वानि त
 न्मसि स्वाहा ॥ ॥ नाजा ॥ ॐ नाजकमध्वना ॥ नाजापासृगस्य दीदिवि
 स ॥ वर्द्धमाने ५ स्वदम ॥ सन ४ पितं वसूने वं ॥ सूपाय नारव ॥
 सचस्वाने ४ स्वसुय स्वाहा ॥ ॥ दं ॥ ॐ प्रजापते नत्वेदतान्य
 न्या विष्णु नृपा लियनिगावहव ॥ यत्ना मासं कुरु मे सुतो ५ ॐ १२

सुवय ५ स्यामपतया नयीत्वा स्वाहा ॥ ॥ यजमान ॥ ॐ यस्य कू
 म्भा गृहं हविस्तम ॥ यवर्द्धयात्वं ॥ तस्मै देवा ५ अविबुवन्मय ५
 वृक्षेण स्पति ४ स्वाहा ॥ ॥ अवेन स्पृ ॥ ॥ दं ॥ ॐ ह्यय
 य स्वाहा ॥ ॐ अक्ष ॥ ॐ नात्राय लाय स्वाहा ॥ ॐ ॐ देविष् ४
 सदा विव ॥ ॐ नम ४ ॥ मृवाय च ॥ ग ॥ ॐ गला नो न्वा ॥
 दं ॥ ॐ नमा व ५ ॥ नाग ॥ ॐ नमा सु स ॥ ह नमन्त ॥

उं नी वा न्धा वा न्क ल्ध न वृ ष पा ल या ष्वा न्ध (ध) रि ४ सह वा ऊ य न्क ४ ॥
 अ व क्रा म न्क ४ अ य दे न मि क्ता न्दि ल नि षा वृ ष न ल य वृ य न्क ४ ॥ वा
 ना ही ॥ उं य स्य वृ मा गृ ह ह वि रु म (न) व र्द्ध यो त्व म् ॥ न स्मे द वा ३ अ धि
 वृ व न य ऊ वृ क्त ल स्य ति ४ ॥ प लु य ति ॥ उं न म ४ ण ग व च य णु
 प त य च न म ३ उ ग्र य च ली मा य च न मा (गु) व धा य च दू न व धा
 य च न मा ह क च ह नी य स च न मा वृ द्ध स्या ह ति क (ल) स्या न म

१ गुरुवरी ॥ उं जम्भः जम्भि ॥
 स्तानाय ॥ दगुलि ॥ उं बृहस्पति ॥ अतियदर्थः अर्ह्युमद्विराति
 क्रतुमकुनवू ॥ यद्दीदयकवसः अगप्यजाततदस्मासूद्रविर्लक्ष
 हिचिपु ॥ थंथूदव ॥ उं यागनूद्रजिवातनूनघात्रापापकाणिनी ॥
 तयानसुन्याशनमयागिति ननाश्चिकणीहि ॥ वृंगदव ॥ उं ज्वा
 कष ॥ पञ्चगि ॥ उं ज्वाभिः अर्चिः पवमानः पाञ्चजन्यः पूनाहितः ॥
 तमीमहमहगयं ॥ लिखननानायल ॥ उं सहस्रणीय ॥ मलिकुमान ॥

[illegible]

द्व॥ॐ समस्त देवा विद्यासुन्दरि ललाटे नमः ॥ मां ॥ श्री गुरु ॥ प्रभा
षीर्मा ॥ अहं तव वीर्यं विदयतवदविसृजि ॥ ॥ ॥ ॐ नमो वसुधा
य ॥ लक्ष्मी ॥ ॐ अस्मिन्नागा ॥ दामोदन ॥ ॐ ह्रीं विष्णु ॥ नृसिंघ ॥ ॐ
नमो मुनी लक्ष्मी वाय ॥ नलक्ष्मी ॥ ॐ नमस्तु त्रुदम ॥ अगम् ॥ ॐ अ
म्ब ॥ अम्बिकम्बा ॥ हनसिद्धि ॥ ॐ अम्ब ॥ अम्बिकम्बा ॥ वाग्मती ॥ ॐ य
कीर्त्तनी ॥ अगिनि ॥ ॐ श्रीं ॥ ह्रीं ॥ यरुतानामधिपतया वि

शिखासं ४ कपर्दिन ४ गवा ५ सहस्रया जनवधन्वानितन्मसि ॥ लक्ष्मी
 नात्राय ७ ॥ उं वूं दं विष्णु ४ ॥ र्गं ४ ॥ उं यगु वा ७ ॥ गृह लक्ष्मी ॥ उं श्री
 श्रुत ॥ हृदमह ४ ॥ उं विष्णु गच्छ कृत्त विष्णुता मूर्खा विष्णुता वाद्र
 त्रुत विष्णुता स्यात् ॥ मन्वा द्रुयान्धमति सम्पत्तये श्री वात्समी ज
 नयन्देव ५ प्रक ४ ॥ वूं तिद ४ मपाति ॥ ॥ ४ मकि क १० ॥ उं श्री ४ ७ ॥ १२
 कि नक ॥ ॥ पूरि क १० ॥ उं शुच के यजामह ॥ ॥ यवध न्यादि हाम ४ ॥

यवध न्यन थ मूर्ज कलार्य माषमवच ॥ कृत्त क काल माष पुसि द्वाः
 र्थि चाष्टमं ब्रीहि ॥ यवध न्यला जा समिध पायू सगू जदन दध्वा दने
 जाम्बी न श्री रुल नानी कल वदनी रुल उा षधी नूय कं ७ न यद्वक
 ७ न ७ न यूप्य सुमुख प्रियं गू गू गू रच चदन कूं कूम स्फन्द मूल
 रुल गाम्बूल यको न दूर्वा दग दूध मिश्रान् हाम यत् ॥ ॥ वलि ॥
 उं जूसं रखाता ॥ ॥ अग्नि मयती ॥ उं वं ७ न नया य विम ह जने ना

चिंतायधीमहि॥तन्नावक्रिप्रचोदयात्॥ ॥संपूर्णद्वि॥उंवा
 र्क॥उंपूर्णदर्विपत्रापतस्रपूर्णपूनत्रापत॥बलं वविक्रील
 वहः॥ॐ वसूक्तं०॥गणकतास्वाहा॥ ॥उंआप्यायस्वसमंतुत
 विष्णुत०॥सामवृष्णम्॥एवावाजस्यसङ्गथ॥सर्गपया॥
 सिसमूयनुवाजा०॥संवृष्णान्यलिमातिषाह०॥आप्यायमा
 नाः॥जमृतायसामदिविष्णवा॥सूरुमानिधिष्य॥आप्याय

१०

स्वमदिक्तमसामविष्णुलिन०॥गुरि०॥एवान०॥सप्रथसुम०
 सखावृधे॥ ॥वदिउस्थानं॥उंउद्वयंत॥उंआवर्क॥उंसंवर्हि
 न०॥॥हविषाघृणनसमादिलेर्वसुरि०॥सम्मत्रुहि०॥समिन्द्रावि
 ष्वदवलित्रक्षदिवानेरागकृतुयत्स्वाहा॥कृष्णंशुद्रयात्॥
 ॥ ॥आसंसा॥पूष्पप्रदानं॥उंमनुार्थ०॥सनुकलेणसुलिल
 वेष्मननादिरुदवता०॥सुप्रीतावत्रदारुनु॥गूरुणवोक्तं॥

स्यः शुभं वदतु ॥ राजा धर्मवीर वदतु ॥ प्रजाः सुखिनः स
 नु ॥ दण्डशुभादयामु ॥ यजमानानां सगलपत्रिका जालमाय
 ना नाग्यमेष्वयं जनधनलक्ष्मी सक्तिसक्तानवृद्धिनमु ॥ द्विप
 दशुगुणदयः शुभं वदतु ॥ सर्वसत्त्वाः सुखिनः सनु ॥ य
 म्यन्तः कालवर्षीरवदतु ॥ सर्वम्यनिपूर्लममु ॥ ॥ जायमशुल
 साय ॥ ॐ नमोऽग्नये ॥ ॐ मृद्वदाय स्वाहा ॥ यज्ञेन पतनपदः

११

सामवेदाथ हसं. न काथर्वादितीर्थं ज्ञातपथवदनेवाहर्गं ब्रह्म
 षं ॥ गमयतीत्यस्य गमयं नयनमूपनिषक्तं मन्त्रेव दंष्ट्रा. विष्णु
 कृतमूर्तिस्तव श्रुतिवदनयत्तु यो वनाह ॥ गजारवांश्चानि वि
 ष्णुं रुवकैलूषहर्षपावकैलूषव ॥ स्वः सर्वार्थं व्यापविष्णुमनि
 जननमितं लखनेन किं हसं ॥ जनांश्चार्थं तनात्मा कनकमय
 कर्तृत्वं सत्त्वमिति सुखं. वन्दे वल्लभं कर्तुं दिजनिखिलगूर्नं

चिच्छंरु वनी ॥ उं अज्ञानाज्ञानता वापिय न्यया माहितं कर्त ॥ द
 नुमही सिद्धवन्मायुर्महता प्रण ॥ त्वंगतिः सर्वरुतानां संहि
 ता त्वंचराचन ॥ अकृष्णं न तादृशं त्वं पत्रमव्यय ॥ क
 र्मात्मनसा वाचा त्वत्ताना न्यागति मीमा ॥ मनुही न क्रिया ही
 नं रुकि ही नं तत्त्वेव च ॥ जपहामा च न ही नं कर्त नित्यं मया
 तवा ॥ अकर्तवाक् ही नं च तत्पूजयद्गता न ॥ अर्गंधादि ॥

१८

॥ ॥ अग्न्याभीर्वाद् ॥ उं अग्निर्जुषिः पवमानः ४ पांचजन्यप्रनाहि
 तः ॥ गमी महमहा गयम् ॥ ॥ आत्मा हिषकी अर्घ्यपाशादकन ॥
 उं स्वस्तिनः ५ ॥ चन्दन ॥ उं यदश्वक ॥ मण्डलस्य पूष्यणि
 नेसितुषर्णी ॥ उं यस्य कूर्मा गृह ॥ मण्डलविसर्जनी ॥ ॥ हस्ताया
 अग्नितापय ॥ उं गनूपाः ५ अग्ने सितन्वीपाद्यायुर्दीः ५ अग्ने
 स्यायूर्मदहि वृक्षादाः ५ अग्ने सिद्धिर्वा मंदहि ॥ अग्ने यन्म

तन्वाऽउनक्तम्ऽआयुता॥मधामदविसविताओधामदमधामद
विसत्रस्यतीआदधामदमधामदधेनाईवावाधलापूकनसुता
निर्यगमानिचआयायतावाकप्रालक्षदुष्टैर्ययलमवली॥
॥॥उंशासूयंउमलनऽकऽधपल्यशासूय॥यद्वधषूयासूय
गन्नाऽजमुयासूय॥अगल्लरसललाटगीवायांददिलवा
रुमूलददितिलकैकात्रयं॥॥अथहाम॥उंचूलिकाग्रयं

स्वाहा ॥ ॥ न्यामं कृत्वा ॥ सूर्यसादि ॥ इति सप्तमपर्व ॥ अचम्य ॥
 ॐ नित्यं लोकानि हाम विधिः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 संपूर्ण ॥ अथारुवदिपनः वल्लुदि १ मं ३ र्था ३ र्था ३ र्था
 एतन्नामसमस्तं ॥ लिखितम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ब्राह्मे। जालीचं वक्रं लक्ष्मीं मलिकावालीवर्चनी। चूनाकाटपूषं च गुललीकातप
 प्रकां। कृष्णं तगत्रं च वल्लुगमात्रं कतकी। मृधिकामलिमूकं च अथ याम्या ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

सनकादिमन्त्राख्यं दमासनीनमः॥ यूर्यनमः॥ त्रुवाक्कन॥ यदार्थानमः॥
 त्रुवन्तिकंभ्रवायायादि॥ उँतन्तिकंभ्रवस्तेवतायं दमासनीनमः॥ यूर्यनमः॥
 यादार्थानमः॥ उँज्वायायायं दमासनीनमः॥ यूर्यनमः॥ यादार्थानमः॥
 यजमाननस्वदस्त्रोयादोयुक्ताख्याचम्यग्राह्यमिध्यायात्॥ ॥ स्वस्वामनसमूयविष्णु
 ॥ यजमानेनाचम्यसर्वान्वाङ्मलानाचम्य॥ विष्णुदत्तायासनीदद्यात्कुशंकुमना॥
 विष्णुत्वादवस्यं दमासनीनमः॥ उँवैष्णवनदवस्यं दमासनीनमः॥ त्रुवयूर्यन
 मः॥ ॥ अथस्वयंनकुशमितेनासनीदद्यात्॥ उँगार्ग्यगार्ग्यमिति चित्तिलकुशं दं

दमासर्नस्वधा॥यिगामरुगिलकूशं॥दमासर्नस्वधा॥युयिगामरुगिलकूशं॥दमा
सर्नस्वधा॥यूष्मिन्स्वधा॥ॐ यिगयस्वधायिगयस्वधानमस्वधायिगयस्वधायिगय
स्वधानमस्वधायिगामरुगयस्वधायिगयस्वधानमस्वधाअकून्नस्वधायिगयस्वधायिगय
गयस्वधायिगयस्वधायिगयस्वधानमस्वधा॥ॐ अग्निशिख्यस्वधानकादिमन्त्रायागदा ३
धत्रमूर्ध्निस्वधा॥दमासर्नस्वधा॥यूष्मिन्स्वधा॥नन्दिकम्बनावाय्यास्वधा॥ॐ नन्दिकम्बना
यस्वधा॥देवगायस्वधा॥दमासर्नस्वधा॥यूष्मिन्स्वधा॥ॐ आवाय्यायस्वधा॥दमासर्नस्वधा॥
यूष्मिन्स्वधा॥ ॥ददरुहंनकूशं॥कूर्तगृहीत्वा वामरुहंनकूशं गिरुहं गृहीत्वा उ

क्वायदक्षिणसिमुखस्तत्सर्वान्पिण्डगणानावाहयन्॥ॐ आर्द्रयितुं नमो विदुषा
 ॐ ज्वलितिनः पानीयविक्रमलं च विष्णुं च वर्हिषदायं सध्या सुगन्धस्य रुक्मयित्वं
 वृक्षागमिष्ठा अग्निष्वात्माऽपिण्डगलाऽप्यर्वायं ककुमुमादिर्वा तथैव वर्हिषदऽप्याकु
 याम्यायपिण्डनक्षत्रिणाऽप्यनीचामाश्च याम् रुद्र इक्ष्वाक्यमपि सामयात्रा चक्षुःश्रुति
 गन्धश्चक्षुःसदवाप्तुनगामम सर्वशुभं लयायां यमो नक्षत्रिको भोक्तुमा ॥ निलान्नक्षत्रं
 सूनादङ्गान्नक्षत्रं नाक्षत्रं शयं किं चैव प्रियं नक्षत्रं दानिधिऽसर्वं नक्षत्रं ॥ कुम्भकमा
 नं विक्रिणम् ॥ वामरुक्मिणं कुम्भं निलान्नक्षत्रं रुद्रं नक्षत्रं धृत्वा यत्नम् ॥ ॐ गन्धसिद्धि

बुलाकार्य आगताहिमयागत । मनसा वायूरुहं न विषुवाह नियाऊय ॥ अथ सवा
नकुश । गिलीवाकलस्या एनिधाय ॥ सवा न ॥ उं विष्णवे वा अग्निवे वा न नदं वा अ
थं आसर्व ॥ अथ सवा न ॥ उं विष्णवे वा अग्निवे वा न नदं वा अ
सनकादि सनय गदाधर मूर्त्य आसर्व आसर्व ॥ उं नदि कं च वा वायु मूर्त्य आ
सर्व आसर्व ॥ ॥ पूर्वशिमुखेन वा स ॥ उं गदाधराय नमः ॥ उं गदाध
राय नमः ॥ उं गदाधराय नमः ॥ उं गदाधराय नमः ॥ उं गदाधराय नमः ॥
थं क म उ लू पू ऊ य म ॥ उं बुद्धलनमः ॥ उं विष्णु वनमः ॥ उं नृपाय नमः ॥ उं सदा

[illegible]

ॐ उरु नमो देव्य शाक्य कर्तृ दक्ष्या र्ध निधाय ॥ ॐ त्वं विदुः सखा नृपया हि
 ललुषी ॥ गेन ४ ॥ प्रकाशक मूलतमना ॥ यमात्र द्वाक प्राप्नुम ॥ ॥ कृष्ण गिली गृहीत्वा
 बाष्प लब्ध्या ॥ य निधाय ॥ ॐ गार्ग्यो गार्ग्य निधाय यथा नाम जर्मल दक्षिण स्वस्थायि त
 त्यशा कृष्ण गिली स्ववामया र्ध निधाय ॥ ॐ प्रकाशक नैवल गहनैवेषू वीमिदमहनैवल
 गमूक्ति गामिर्यम निधाय ममाथा निवर्त्तानंदमहनैवल गमूक्ति गामिर्यम समा
 नायमसमाना निवर्त्तानंदमहनैवल गमूक्ति गामिर्यम सर्वधूर्यम सर्वधूर्तिवत्त्वा
 नंदमहनैवल गमूक्ति गामिर्यम सजाता यमसजाता निवर्त्ताना रूपां किनामि ॥

यमात्रक्रीकत्राउम॥ ॥ सर्वानयुर्वारिमरुवनयुष्यराकनस्यजात॥ ॐ सर्ववाय
दशमत्रत्यमृगाः कार्जुनगिरी । चक्रवाकाः सप्तदीपहंसाः सप्तसिमानसः । गण्डिका
गाः कुरुक्षेत्रं वासुदेवदयानगाः । पुष्किणा इवमन्त्राक्तः पूयन्त्यश्चसीदताः ।
द्वर्षमिगयाः । त्वाः । त्वादवंगदासर्पः । नास्यान्वेव नमस्कारं यत्र प्रद्वयवर्णेन
॥ पूर्वस्यादिनिष्पद्यन्तः ॥ ॐ गम्याये नमः ॥ ॐ गदाधनाय नमः ॥ ॐ यूलुनीका
काय नमः ॥ ॥ पवित्रजलं नमस्कारं । त्रिपुलाद नमः ॥ ॐ नादीनिर्मितयन्तः
॥ ॐ ज्यविषुः यविषावाः सर्ववस्त्रागगायिवाः । यः स्रग्ं त्यूलुनीकाः स वाक्काः ।

नमः शिवाय ॐ नमो देवी शक्ति ह्येवाया तत्तु यीतया । नमो शक्ति वलुनः ॥ वि
लम्बदवादि वाक्कलत्तयः सर्वे लयाजलं ददन् ॥ ॐ सवाक्काय नमः शिवाय ॥ अय
संशानददित्वा शिमुखेन पुष्पासाजं नैस्यताम् ॥ ॐ अद्यादि ॥ ॐ गार्ग्यगुणि कर्तुं स
क्रियादजकालप्रयाग्रीवरुमिवाक्कलानां सुसन्निधानममुं ॥ यित् यितामहयुयि ७
तामहानां सुसन्निधानममुं ॥ विष्णुदवादि पूर्वकीयुष्याह्ममर्कप्रिया ॥ वाक्कलानां
याता ॥ ॐ कृन्तु ॥ ॥ संशानविष्णुदवाय पुष्पीदीयते ॥ ॐ कालाय नमः ॥ ॐ कान्ता
यनमः ॥ ॥ अयसंशानयित्वा वाक्कलानां पुष्पीदीयते ॥ ॐ आयाधुव

असामं विष्णुयेवानिलानलशयुष्यश्च प्रतापश्च ॐ सवसवः स्मृताः ॥ ॐ अह
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ अहं कयाददिवृक्षश्च विष्णुयाह्मयेववाह्व
श्च वदन्तु यश्च शुभकश्च सुखश्च ॥ सावित्री च यिता कीच जयनी वायनाजिता । न
कादलो गन्तुश्च कथिता किन्तु वनं च ॥ न कादजं नृदयः पुष्पी स्तम्भा ॥ रुनीं च रुनी
विश्या ॥ ॐ ॐ दुःखारागः शयुष्या मित्राथ वन्तु लभ्यते ॥ अगुर्विवस्वान् सविता त्वहा वि
ष्णुस्त्वयेववा ॥ ॐ सवसवः स्मृताः ॥ ॐ अहं कयाददिवृक्षश्च विष्णुयाह्मयेववाह्व
पुष्पी स्तम्भा ॥ ॐ अहं कयाददिवृक्षश्च विष्णुयाह्मयेववाह्व ॥ ॐ अहं कयाददिवृक्षश्च विष्णुयाह्मयेववाह्व

कंभवायह देवताययूयं नमः॥ ॐ जवायाययूयं नमः॥ ॥ गणेशाय नमः॥
 नी॥ गामयाय द्वयमयाम्मुखेन स्थाप्या॥ विष्णुदेवताय जलनमः पुलीहृत्वा नमः पुलाद
 विष्णुजलनमः॥ वायाय विष्णुदेवताय गमनीय नमः पुलीहृत्वा नमः॥ गमनामनीदद्यात्॥
 ॐ विष्णुदेवताय गमनी नमः॥ ॐ वेङ्कानत्र देवताय गमनी नमः॥ यविष्णुजलनमः॥
 यत्॥ ॐ जयविष्णुयविष्णुवा सर्ववक्त्रा गतायिवा॥ यः समन्तं पुत्रीकादी सदाका
 यन्मन्त्रं विष्णुवा गार्हमुखीकृत्या॥ ॐ विष्णुदेवताय गमनी॥ ॐ वेङ्कानत्र देवताय
 गमनी॥ द्वयाय गमनीयविष्णुनिधाय॥ ॐ यविष्णुवा वेङ्कानत्र देवताय गमनी

ॐ शिवाय नमः

मन्त्रिदलयविष्णुलक्ष्म्यप्रमिरि॥ ॐ विष्णुदेवताय यविष्णुकी नमः॥ ॐ वेङ्कानत्र
 देवताय यविष्णुकी नमः॥ जलनिधाय॥ ॐ गन्नादवीनरिहय जाया रवकुचीतया
 गंजाय रिशवकुन॥ ज्वरुनी निधाय॥ ॐ उषधयः समवदनः॥ समनसः रुद्राक्षाय
 मेकरला उवाक्कलसुठना उ न्यालयामसि॥ चन्दनीदद्यात्॥ ॐ गन्धद्वारा इयाधर्षा
 नित्यपूषीकत्रीकिली॥ वृषीवर्गी सर्वरुगानी॥ गामिहाय द्रव्यप्रियी॥ पूषीदद्यात्॥ ॐ
 श्रीशर्गलश्रीश्रयत्वा मदीयाय याग्वनं रुगानि नूयमधि नोव्यायै॥ वृष्टीतिवानामम
 वृष्टान सर्वशक्तमवृष्टाल॥ पूषीदद्यात्॥ ॐ पूषीसि पूषीवृष्टनी पूषीयासी पूषीतिनी

गीताजाय नमः॥

पूर्वयवयधूर्वामहाकृष्णकर्मगृहीत्वायागुददिलकर्मलयागुनिधाय॥ॐ॥गर्भग
 णतिविष्णुदवयागुवर्षार्थयागुयनिरूर्ण॥ॐ॥वेष्मनत्रदवयागुवर्षार्थयागुयनिरूर्ण
 ॥ॐ॥विष्णुदवयागुगलुलीनिकिष्वावाकलस्यगिरसिपूर्य्यकययम्॥ॐ॥विष्णुदव
 यागालिवाकलानिसक्तु॥ॐ॥वेष्मनत्रदवयागालिवाकलानिसक्तु॥॥अथवीग ८
 दूर्णनयउत्रसुमलुलीयश्चपूर्य्यवकीर्णकृष्णकर्मगृहीत्वायागुददिलकर्म
 लवाकलस्यगुहृत्वायागु॥ॐ॥गर्भगणतिविष्णुदवयागुवेष्मनत्रद
 वयागुदमावाहयिष्या॥ॐ॥आवाहय॥कालाजानकंगय॥ॐ॥विष्णुदवासआगतगु

लगामन्महदुर्वी।उर्ववर्दिनिषीदगविष्णुदवा॥ॐ॥लगामहदुर्वीमयअनुविष्णुयउ
 पद्यविष्णुयायअग्निजिह्वाउगवायउगआसद्यासितर्हिषिमादयर्थ॥ॐ॥आगद्वक्तु
 महारागाविष्णुदवामहावला॥मयययाजिगा॥ॐ॥सावयानावक्तु॥ॐ॥दमा
 वाहयिष्याॐ॥आवाहय॥विष्णुदववाकलपूर्य्यकियम्॥ॐ॥सदसुजाव्ययनय॥
 सदसुजादसदसुयागु।सदसि॥ॐ॥सर्वगस्यस्त्वायनिष्ठद॥ॐ॥गुली॥गुयागमादाय
 वामकत्रनिधाय॥ॐ॥विष्णुदवयागुह्वानं॥यदिव॥ॐ॥यादिव्याआय॥
 ययसासीवरुव्योआननिकुउगयार्थिवीया॥ॐ॥दिनवावपूर्य्यकियासुआय॥

जिवा ४५० स्थाना ४५० रावा वक्तु ॥ वाक्कलास्य रुक्मय विगुं ददत् ॥ ॐ विश्वदवया
 ययविगुं कं नम ॥ १ ॥ पूष्यददत् ॥ ॐ विश्वदवया ययपूष्यं नम ॥ ॐ मर्ग्यमयुं नि
 विश्वया दवया रुक्मार्ध स्त्राहा ॥ उलीददत् ॥ ययर्ध ॥ ॥ ॐ वैश्वाननयदवया
 य ॥ ॥ वैश्वाननयदवया ययस्मिन्कुं जलादि विश्वदवया ययनिद्रिया ॥ ॐ यवा
 सियवया स्मद्धा यवया प्राती विश्वदवसजनादि विश्वदवसजनमसि ॥ गडालेना
 त्मानं सिद्धयम् ॥ ॐ स्वस्तिनं ॥ ॐ बुद्धयवा स्वस्तिनयवा विश्वदवदा ॥ स्वस्तिनस्मा
 ॥ ॐ अनिष्टं नमि स्वस्तिनो वृद्धस्य निर्दधाम ॥ गत्यां विश्वदवसा ददि ॥ ॐ स्वाहा ॥

विश्वदवया ययसजनार्थ विश्वदवया ययस्मिन्कुं जलादि विश्वदवया ययनिद्रिया ॥ ॐ यवा

विश्वदवयूजयम् ॥ ॐ कुंजर्गुलिगयात्र यंगनगवक् ॥ ॐ विश्वया दवया ययन्यतेन
 म ॥ ॐ वैश्वाननयदवया ययन्यतेन नम ॥ ॐ कुंजर्गुलिगयात्र यंगनगवक् ॥ ॐ विश्वया दवया ययन्यतेन
 ययदीयं ददत् ॥ अगुगन्मादि ॥ ॥ ॐ तिविश्वदवया ययसाधनी ॥ ॥ अथ ययिया
 ययसाधनी ॥ ॐ तिविश्वदवया ययसाधनी ॥ ॥ अथ ययिया
 अयसवयन कुंजर्गुलिगयात्र यंगनगवक् ॥ ॐ कुंजर्गुलिगयात्र यंगनगवक् ॥ ॐ विश्वया दवया ययन्यतेन
 ॐ यिगामरुयागयासनी स्वय ॥ ॐ ययिगामरुयागयासनी स्वय ॥ ॥ ययिगुजलनसिद्ध
 यम् ॥ ॐ अयविगुं ययविगुं वा सर्ववस्त्रागगायिका ॥ ययमयययुजीकाई सवा द्वा

70

४ अथ कृतसमानं काव्यं ॥ पूनः ४ युक्त्या गीसाक्षयं

विनामरुपुविनामरुनिदमावाहयिष्ये ॥ वाक्कलन ॥ उँ आवाहय ॥ उँ उगंगलानि
धीमङ्कृगं नमः समिधीमहि ॥ उमं नूगं मआवहयिष्ये नमः विषं अरुवं ॥ उँ आयन्तु
नमः विनामरुपुविनामरुनिदमावाहयिष्ये तयानेष्टा अस्मिन् यज्ञं स्वयं यामदन्तामिव
वक्तुं गेवं तस्मान् ॥ उँ देवतास्य विनामरुपु मरुतामिष्ये नमः स्वाहाये च स्वयं ॥ ११
येन नित्यं भवतमीनमः ॥ वाक्कलन ॥ उँ आवाहय ॥ ॥ यागुल्लिगं पूर्णं गृही
त्वा वाक्कलस्य शिवास्मिन् यज्ञं यम् ॥ उँ शीलियदा विचक्रुर्मविष्णुर्गोया अदास्य ॥ अ
भाधर्मो निधाय यत् ॥ पूर्णं स्वयं ॥ गत्यागं गृहीत्वा वामकं नित्यं यम् ॥ उँ विना

यागुल्लिगं ॥ यविष्णुस्य ताउयम् ॥ उँ यादिवा आयः पयसासं वरुव्या आरुनिद्राह
गयार्थिबीयोऽदिनत्थवर्षयद्भिः साहा आयः शिवाऽन ॥ १२ ॥ शानाऽऽरुवारावक्तु ॥
यागुल्लिगं कृगं वाक्कलं कथं ददन् ॥ उँ विना यागुयविष्णुं स्वयं ॥ पूर्णं ददन् ॥ उँ विना
यागुपूर्णं स्वयं ॥ उँ मग्गं मातुनि विना यथा नाम्ना निद्रा दकदसास्यं स्वयं ॥ लीखा
यागुपूर्णं ॥ उर्वं विनामरुपुविनामरुदस्या ॥ ॥ यागुचयनी ॥ उँ दिवं त्वीमपि का
यत्वा यथिवीत्वा सुन्धनीं ताकाऽ ॥ विनामरुपु विनामरुपु दनमसि ॥ गत्यागं वाक्कलस्य
वामरागकाया ॥ उँ विना विनामरुपुविनामरुपु यथागुसुतार्थ ॥ उँ विना विना

महयुगिनामहंरुयः ४ यागसुजनमसि ॥ ॐ विर विनामहयुगिनामहंरुयः ४ यागसुजनमसि
॥ कसयुगनगनक ॥ ॥ सद्यतगदाधनयुजन ॥ जलस्तानी ॥ ॐ स्वस्तिनं ॥ ॐ द्वावृद्ध
वास्वस्तिनयुषाविश्ववदा ॥ ॥ स्वस्तिनस्तामहंरुयः ४ यागसुजनमसि ॥ ॐ स्वस्तिनं ॥ ॐ द्वावृद्ध
चन्दन ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
भा ॥ अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
नमः ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
ग ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २

कलीखविया ॥ ॐ अतिथिरुयः ४ सनकादिमनूषा ॥ ॐ दमासनं नमः ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
क ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
महयुगिनामहंरुयः ४ यागसुजनमसि ॥ ॐ विर विनामहयुगिनामहंरुयः ४ यागसुजनमसि ॥ ॐ स्वस्तिनं ॥ ॐ द्वावृद्ध
वास्वस्तिनयुषाविश्ववदा ॥ ॥ स्वस्तिनस्तामहंरुयः ४ यागसुजनमसि ॥ ॐ स्वस्तिनं ॥ ॐ द्वावृद्ध
चन्दन ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
भा ॥ अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
नमः ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २
ग ॥ ॐ यदद्यकचवृद्धनदगा अतिस्तुत्य सर्वकदिदुगवरा ॥ गयलिर्विश्वदार्ज ॥ २

वास्यस्यसुवर्णं न जगत्सूडिकां तुल्यमहंसीयददं सुहि ॥ ॥ धृष्टदीर्घददं ॥ ॐ ग
 र्ध्वं जगत्सि विष्णुः ॥ ॐ गार्ध्वं जगत्सि विष्णुः ॥ ॐ गार्ध्वं जगत्सि विष्णुः ॥ ॐ गार्ध्वं जगत्सि विष्णुः ॥
 थिर्यः ॥ सनकादिमनुष्याः गदाधनमूर्तिर्यानन्दिकं च नष्टदेवतस्य आचार्यस्या
 धृष्टं न मादीयं न माधुर्यं स्वधादीयं स्वधा ॥ कर्मन ॥ अगुगन्धदि ॥ ॥ गदीयं ग
 हीत्वादीयराजं नदं किल मुखनस्तथा ॥ ॐ वृद्धमूर्ध्नि ॥ सूर्याय धृष्टं क्रियता ॥
 ॐ यग्नं ॥ ॐ सूर्याः ॥ ॐ गार्ध्वं ॥ ॐ गार्ध्वं ॥ ॐ गार्ध्वं ॥ ॐ गार्ध्वं ॥ ॐ गार्ध्वं ॥ ॐ गार्ध्वं ॥
 त्वाकृष्णं कर्मनिधाय ॥ सधनयुर्वस्यादिजिकमलुर्लीनिधाय ॥ तस्यारुप्रविकल्पया

१३

तस्याः कर्मयुक्त्याः १

ॐ मधुराग ३

ब्रह्म (वैतन्या स्याय ॥ ३

ॐ ॥ तस्याः कर्मयुक्त्याः ॥ तस्याः कर्मयुक्त्याः ॥ तस्याः कर्मयुक्त्याः ॥ तस्याः कर्मयुक्त्याः ॥ तस्याः कर्मयुक्त्याः ॥
 रुप्रवहिर्होत्रीभदि ॥ तत्सर्वस्याः ययश्चिमायादिजिह्वीययागुनिधाय ॥ ॥ या
 क्रलस्याः ययुतमधुसाहिल्यनकां गयार्गुनिधाय ॥ ॐ दृक्कयार्गुनिधाय ॥ यजुता
 भनयुर्वीरिमुखनकत्राङ्गन्यासः ॥ ॐ श्रीरान्नास्यकली ॥ ॐ त्वमग्नेश्वरिह्मागुगु
 कलिह्ममश्वत्थमनसमनस्यवि ॥ त्वं वनं त्यक्तुमाषधीर्यस्त्वं नली नृपगजायगगु
 विष्णुः ॥ यजुनीयन्दनादि ॥ ॐ यदशकवृष्टुहन्तदगमश्चिह्नसूर्यसर्वकदिन्दुगव
 णा ॥ मन्त्रलिचिश्चदजिगा ॥ ॐ निष्कदसिह्नसूर्यविश्वमारासिवाचनं ॥ सिद्धं ॥ ॐ त्वं ज

विषदासूखानं ॥ यद्विष्टलूधीति ॥ शत्रुकागाकुमूगन्मना ॥ यूर्ध्व ॥ उं या ॥ रुलिनीया रु
 लायूष्यायास्ययूषिनीवदस्यति ॥ पुसूगास्तानामुष्टग ॥ रुस ॥ कीनान्नमधुनियया ॥ उं
 मधुवागाप्रतायगमधुक्वन्तिसिन्धवशमाधीर्नसीगावधीमधुनकमूगायमामधु
 मर्याधिर्वत ॥ नऊ ॥ मधुश्रीप्रफुन ॥ यिगामधुमान्वावतस्यनिर्मधुमा ॥ उं अमुसूर्यश ॥ १६
 माधीर्नसीगावधीमधुन ॥ यूर्ध्वनिधाय ॥ उं नऊ ॥ सिन्धुकमस्यमृगमसिधामनामासिपी
 यद्वानामनादिसुदवयजनमसि ॥ इयंनिधाय ॥ उं यय ॥ यधिवाययउषधी
 व्ययादिवान्नविद्ययाययय ॥ स्वगीयुनिसमकुमर्दी ॥ गङ्गा ॥ नीनिधाय ॥ उं सम

यामिसमायउषधीरि ॥ सुभाषययाप्रसना ॥ स ॥ वनिर्गुगतीरि ॥ यद्वान्ना ॥ सीमधुम
 तीर्मधुमतीरि ॥ यद्वान्नाम् ॥ कर्तन ॥ उं रगागमायनमशा ॥ उं रात्रद्वाजायनमशा ॥ उं वि
 श्वामिगायनमशा ॥ उं यमदग्नेयनमशा ॥ उं वलिष्टायनमशा ॥ उं कथययनमशा ॥ उं अ
 नुयनमशा ॥ उं बुद्धलनमशा ॥ उं विबुधनमशा ॥ उं नूजायनमशा ॥ उं पुजायनयनमशा
 उं सर्वेषादवस्थानमशा ॥ उं पुजायननत्तदगाव्यन्थाविश्वान्रयालियनिगावत्तवा
 यत्कामार्कुरुमस्तुनो ॥ इमुवय ॥ ० ॥ स्यामयनयात्रयीली ॥ ॥ यजमाननद्युगमधु
 सहिगकागयायददग ॥ उं मधुवागाप्रतायगमधुक्वन्तिसिन्धवशमाधीर्नसीगाव

कन॥ उँ ॐ दमयं कव वाहनाय त्याग ॥ ॥ श्री गान्धी गृहीत्वा य ॥ ० ग
उँ भामाय विरम ग स्वाहा स्वधा ॥ स्वप्न संविय ॥ गिलक ॥ दकन ॥ उँ ॐ दं सोमाय
विरम ग त्याग ॥ ॥ श्री गान्धी गृहीत्वा य ॥ ० ग ॥ उँ यमाया द्वि त्र सं
स्वाहा स्वधा ॥ स्वप्न संविय ॥ गिलक ॥ दकन ॥ उँ ॐ दं यमाया द्वि त्र सं त्याग ॥ ॥ २०
मो नि धाय ॥ ॥ यजमान नता ॥ उँ जू (मो) रुगी ॥ वाक्कल त ॥ उँ सू रुगी ॥ ॥ सदान
विष्णु देवाय गृहिता श्री गान्धी दयं दाय यं ग ॥ यजमान न विष्णु देव स्यान्न यार्ग्य
॥ ग ॥ उँ य धिवा ग या य धो र्वि धान ॥ उँ वाक्कल त स मुख जू रुगी जू रुगी रु दामि स्वाहा ॥

विष्णु देव या शा ग य ॥ य स कृ ॥ त य ग य ॥ जू रुगी दिय ग ॥ उँ ॐ दं विष्णु र्वि त्र क म य
धा नि द ॥ ध य दं ॥ समूह म स या ॥ ० सू त्र ॥ उँ विष्णु र्वि त्र ॥ ० न द ॐ द मा य ॐ द मा द ॐ दं
रु वि शा ॥ उँ य वा ॥ सिय व या स कृ ॥ य व या ना नि ॥ ॥ अ य स धा न यि त्र य कृ वा द ॥
गिली दिय ग ॥ ॥ ग य थ य स ग ॥ उँ विष्णु र्वि त्र ॥ ० न द ॐ द मा य ॐ द मा द ॐ दं रु वि शा
य ज मान न वाम रु रु न दू लिका मृ लि क या व उ न मु क्ता ल्या नि व द य ग ॥ उँ अ य रु गा
जू सू ना न द ॥ ० सि व दि ष द ॥ कृ ग य दू ल्या दिय ग ॥ स क य द सा क दा व या य ॥ उँ य
दू या नि यु नि मू र्ज माना ॥ जू सू रा ॥ ० स ध या व न कि ॥ य ना य ॥ नि पु ना य रा न कृ मि षी

लोकां युमूदा गन्ताः ॥ विक्रयकायना (ग) याम्नायल वदिहोत्रां गदि थमस
 द्युयानय ॥ ॥ विक्रययागुपिलुयागुधायसंगय ॥ ॥ वाक्क (ल) यादुविक्रयुजनादि
 यूनयम् ॥ ॥ समस्तं नहि ॥ विष्णुदवयागनामगनि ॥ विद्यनथिनकावनाम
 न ॥ ॥ नमो नमस्तु कल्याणम् ॥ यजमानेन सव्येन कुशं दत्तादकं गृहीत्वा य
 न् ॥ ॐ विष्णुयादव ~~विष्णुयादव~~ विष्णुयादव मन्त्रं सद्युर्गं सः कीं शायकनलीद
 रुं शायकनलीं सहिर्गयद् रुं नददास्यामि निषिद्धवर्जिर्गं नत्यः स्वाहा ॥ ॐ द
 मन्त्रं कल्याणसिद्धिं ननु ॥ विष्णुदवयागनामगहविद्य ॥ ॥ जयसव्येन कुशं नि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीमान् रुद्र मिदमन्त्रं कल्पति द्विजमु।

[illegible]

[illegible]

निर्वृत्त्या नंदमरुतं वलगरुत्किं जामि यमं सज्जगाम सज्जगाम निर्वृत्त्या नात्कृत्या किं ना
मिगशास्त्रात्तसि सयत्तदा सयत्तसि मागिहा । ऊनरात्तसि त्रकाहा सर्वरात्तस्य मि
गुहा ॥ ३ ॥ नक्षत्रा नो वा वलगरुत्तथा कामिवेषू वा त्रकाहा नो वलगरुत्तना वनया मि
वेषू वा त्रकाहा नो वा वलगरुत्तना वस्तु लामिवेषू वा त्रकाहा नो वा वलगरुत्तना उय द
धामिवेषू वा त्रकाहा नो वा वलगरुत्तना ययू लामिवेषू वा त्रकाहा नो वा वलगरुत्तना उय द
उं अग्रयं कवा वा नय स्वाहा ॥ सामा यधि ह मग स्वाहा ॥ अय दता अग्रयं वा ॥ ० सि
धदिष्य द ॥ ५ ॥ उं यं नूपा लिषु निमू अमाना अग्रयं वा ॥ सक्तं अक्षयं वा च त्रकि । यत्रायू

पूना अष्टस्त्रो गजसासादयामि ॥ १७ ॥ उँ यदा विद्यमानं नीयुः १५ मुदिगा धयेत्
 । नुगदं दग्धं अर्चु गारो वामादं नो विग्नो मया । संपत्तं सुसंमाराडं दीर्घकविय
 चेत्तु विमो या यत्नार्थक ॥ १८ ॥ उँ दवायुः सर्मन्तु गारो वामादं शिष्या विना वाचा
 सत्रस्वगी शिष्या गिद्वयं न्दिया निदधे ग ॥ १९ ॥ उँ दीर्घाये नृप ० ग ॥ शिष्या २१
 लीयस्य गा कानि । कुयस्य नृप ० सामस्य लाजा १ सामा ० ग ॥ वामधू ॥ २० ॥ उँ अ
 गिष्य नृप ० सामा सत्रमहावीरस्य नृप ० । नृप ० मयस्य दामे ग ॥ शिष्या १५ सूत्रा सु
 गा ॥ २१ ॥ उँ सामस्य नृप ० कीनस्य यत्रिमुत्पनिधि च ॥ अश्विरी इत्येव शिष्या मि

न्यायेन ० सत्रस्वत्या ॥ २० ॥ उँ अमन्दी नृप ० ग ॥ जार्थे वडी कुम्भी सूत्रा धानी । अर्चु
 नडकन वंशानृप ० का शिष्या ॥ २१ ॥ उँ वंशानृप ० सामाया गवर्दिषा वरिदिपि न्दु
 यं । यूपय नृप ० यूपय नृप ० यली गो अग्नि नृप ० निना ॥ २२ ॥ उँ सुविद्वानृप ० नृप ० नृप ०
 यत्सत्रस्वगी । नृप ० न्यायेन ० सत्रस्वगी यली ग ॥ लं ग ॥ मर्दयत्य ॥ २३ ॥ उँ येष शिष्या
 नाथी स्यापि । शिष्यापि र्मस्य । पुया ऊ शिष्या नृप ० जान्वस्य दूका शिष्या र्मस्य ॥ २४ ॥
 उँ येष शिष्या नृप ० सामाया गिष्या ग ॥ सैर्द्वि ० ग ॥ अश्विरी इत्येव शिष्या र्मस्य ॥ २५ ॥
 दूका यान् ॥ २६ ॥ उँ अना १ कर्त्तृ १ ग ॥ कर्त्तृ १ यत्री वाच १ यथा दधि । सामस्य नृप ०

श्रीः

हविष आमि स्वावाजिन मधु ॥ २१ ॥ ॐ धानाना ० नूर्यं कवली यत्री वायस्य ग्राधमा ॥
सकूना ० नूर्यं वदत्र मयवाका ॥ कर्नुरास्य ॥ २१ ॥ ॐ ययसा नूर्यं यद्यवा दक्षानूर्यं
कर्कन्धूनि ॥ सामस्य नूर्यं वाजिन ० सोमस्य नूर्यं सामि ॥ २२ ॥ ॐ ज्ञाना वयमि ॥
गिया ॥ ४ ॥ यस्याग्रवा ० नूर्यं यशय ० निषाया नूर्यं युगमथ ययजाम हा ॥ २२ ॥ ॐ ज २२
ह्म ० वे नूकाना ० नूर्यं यदे नाया नि निविद ॥ ४ ॥ युलवे ॥ ४ ॥ म्ना ल ० नूर्यं ययसा मा
आमे यग ॥ ३० ॥ ॐ ज्ञानिया यग ॥ सवन मित्य ॥ लो लु मा धी दिनी ॥ वेष्टद व ० स न
स्वया गृणीय माय ० सवन म् ॥ ३१ ॥ ॐ वायवो द्या यवा त्या प्राणि गत न डाल कल

२२

गाम

गी ॥ कुम्हायी मी ॥ लो सुग काली रि काली ना प्राणि ॥ ३२ ॥ ॐ य इ रि ॥ प्राची न गृहा
य हे सा माय विष्ट ॥ कन्दारि नूकाल ॥ म्ना नि सामा वर ॥ थ आ यग ॥ ३३ ॥ ॐ व्वा
रि क्काना प्राणि ह क वा के ना निषा ॥ गृयू नाय ती सी या जान्म मिष्ट य ॥ ३४ ॥
स्वाम् ॥ ३४ ॥ ॐ वृग नदी द्या मा प्राणि दी द्या प्राणि दक्षिणा दक्षिणा ॥ ३५ ॥
गृह्या सत्य माय ग ॥ ३६ ॥ ॐ वृगा वदु र्य यरू स्य यद वे व कल ॥ क ग म्ना गद गत्स
ध्व मा प्राणि यरू सो य मला सु ग ॥ ३७ ॥ ॐ सुना वर न व हि ष द ० सुवी र्नी यरू ० सि न नि
महिषान मा रि ॥ शय वना ॥ ४ ॥ साम दि विद वगा सु म द म नु यज माना ॥ ४ ॥ क शि ॥ ३८ ॥

ॐ यस्तु प्रसूतं सूर्यं तडाध्यासु सामस्य शुभः सूर्यासु गस्तु गनक्ति त्वं यजमानं म
 दंतस्य स्वतीमग्निना विन्दुमग्निं ॥ ३२ ॥ ॐ यमग्निना नमस्कृतं राहुना दक्षिणं चतुष्टय
 सतादिलियायां मने ॥ ३३ ॥ मयमकुमितु ॥ ३४ ॥ ॐ यजमानमिह रक्षयामि ॥
 ॥ ३५ ॥ ॐ यदनु नियमं नृसिं ॥ ३६ ॥ गस्तु यदनु अथिवरुची शिशु रुद्र न दस्य २३
 मनसा शिवेन सामं ॥ ३७ ॥ यजमानमिह रक्षयामि ॥ ३८ ॥ ॐ यिह यं ॥ ३९ ॥ यिह यं ॥ ४० ॥
 धानमं ॥ ४१ ॥ यिह यं ॥ ४२ ॥ यिह यं ॥ ४३ ॥ यिह यं ॥ ४४ ॥ यिह यं ॥ ४५ ॥ यिह यं ॥ ४६ ॥
 धानमं ॥ ४७ ॥ यिह यं ॥ ४८ ॥ यिह यं ॥ ४९ ॥ यिह यं ॥ ५० ॥ यिह यं ॥ ५१ ॥ यिह यं ॥ ५२ ॥

॥ ५३ ॥ ॐ यूनकुमायिगत्र ॥ ५४ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ५५ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ५६ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ५७ ॥
 यविगलं गायत्र्या ॥ ५८ ॥ ॐ यूनकुमायिगत्र ॥ ५९ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६० ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६१ ॥
 लग्नाय त्रिंशत्पुत्रा ॥ ६२ ॥ ॐ यूनकुमायिगत्र ॥ ६३ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६४ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६५ ॥
 यनं ॥ ६६ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६७ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६८ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ६९ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७० ॥
 यिह यं ॥ ७१ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७२ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७३ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७४ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७५ ॥
 मातु ॥ ७६ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७७ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७८ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ७९ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ८० ॥
 विगत्र ॥ ८१ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ८२ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ८३ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ८४ ॥ यूनकुमायिगत्र ॥ ८५ ॥

विद्यर्षलिशयः यागासयूनाउमा ॥ ४८ ॥ उँ उराह्यदिवसविगः युविशेलसुधनय। मां
 यूनीहिविषयनशा ४ ॥ उँ वेवदवीयूनुगीदुवागुमशस्यामिमावक्तुर्नोवीगयुह्य
 शतयामदकंसंभमादववय ० स्यामं गेयात्रयीलाम् ॥ ५० ॥ उँ यसमानाः समन
 सोऽजीवाजीवेषूमासकाः नया ० यार्मयिकल्यगामस्मिन्लोकं शत ० सम ॥ ५१ ॥ उँ
 यसमानाः समनसः विगनासमनाः ॥ नयालोकः सुखानमायुः ० दवेषूकल्यगं
 ॥ ५२ ॥ उँ दहृ गिअसुलवापाहृलामहंदुवानामुगमर्णानी। गार्यामिदीविश्वमं ज
 त्समगियदीगनाविगनं मागत्र ॥ ५३ ॥ उँ बुद ० रुविः युजननीमं अरुदगीवीन

२४

० सर्वगल ० सुसुया। आत्म सनियुजासनियनु सनिलाकुसुमरायसनि। अग्निः यु
 जीवदुर्लभिकनात्तनीययात्रगाज्जसासूवर ॥ ५४ ॥ उँ उदीनगामवत्रउत्यनास
 उन्मेषुमाः विगत्रः ० साम्यासः ० अर्मुयवुणीयूत्रदुकापगुल्लासुनावक्तुयितगारवेषू
 ॥ ५५ ॥ उँ अग्निप्रसानः ० विगनानवका अर्थवोलाहृ गवः ० साम्यासः ० गयीवय ० स
 मतोयक्रियातामयिरुड सोमनसं स्याम ॥ ५६ ॥ उँ यनयूह्वयितगं साम्यासान्
 हित्रसामयी ० वसिष्ठः ० गशिर्यमं स ० मनालाहृ वी ० अर्जुनः ० शिः युनिकाममकु
 ॥ ५७ ॥ उँ त्व ० सामयुचिकितामनीयात्त ० अजिहूमनन विर्यधी। गवयुली नीयि

गनानं न्यादवधुनत्तमराऊकधुन्याशा ॥ ५८ ॥ उँ त्वयाहितं ४ यिगत्र ४ सामयूक्ते क
 म्मोतिचुकु ४ यवमानधीना ४ वंत्तनवागयनिधायुयाव्वीप्रसिन्नेर्मध्यवाशवा
 नशा ॥ ५९ ॥ उँ त्वहसामयिगति ४ संविदुनानुयावायथिवीआगतंथा ॥ गमेगव्वे
 डादुविषाविधेमवयहसामयनयात्रयीली ॥ ६० ॥ उँ वरिषद ४ यिगत्रउर्य
 म्मोनिमावाहुयाचकुमारुषधी ॥ गआगुगावसागीममुनाथानुर्ग ४ यत्रयायध
 ग ॥ ६१ ॥ उँ आदीयिगुनसुविदुतां ३ अविहितयातं वविकुमने अविष्ठा ४
 वरिषदायस्वधयासुगसुतरऊकयित्वहव्वेरागमिष्ठा ॥ ६२ ॥ उँ उयहुगा ४

२५

यिगत्र ४ साम्यासावरिषाप्रनिषिषुयियष ॥ गआगामनुगव्वेरापूर्वत्वविषुवकुन
 वंत्वस्मान् ॥ ६३ ॥ उँ आयनुन ४ यिगत्र ४ साम्यासानिष्ठा ४ युथिरिद्वयाने ४ अ
 मिन्नयुक्तेस्वधयामदनाधिषुवकुनवंत्वस्मान् ॥ ६४ ॥ उँ अग्निष्वाला ४ यिगत्रउरुग
 चगुसदंसदंसदगसुयलीगय ४ अगुगुवि ४ यिप्रयनानितुहिषाथायुयिहसर्ववी
 रीदधामन ॥ ६५ ॥ उँ यअग्निष्वालायअनग्निष्वालासधेदिवस्वधयामादयन्त
 गत्य ४ च ॥ उँ सुनीमिमीयथावगं नचकल्ययानि ॥ ६६ ॥ उँ अग्निष्वाला ४ उ
 मगाहुवामरुनागागुससामयीयअगुगु ४ गताविष्ठास ४ सुहुवाशवउवय ४

[illegible][illegible]

द्योता ॥ ११ ॥ ॐ अन्विदन् मत्तर्त्तमन्वासे ऽनञ्जनस्तु विदुस्तु दकायल्लदिनुषद
 जायुः ॥ १२ ॥ ॐ अन्नाद्यान्मतिर्यङ्गदवम न्यगी ॥ अ
 निश्चरुवादा नारावर्गदासुषमयः ॥ १३ ॥ ॐ सिनीवाली पृथुष्टकयादवा
 नामसिस्तसाशुषस्वदुवाङ्गनीयुजान्दवदिष्टुर्ग ॥ १४ ॥ ॐ स्वस्तिनव्वन्दाव २१
 द्वाष्टा ॥ स्वस्तिनव्वन्दाव विष्टवदाष्टा स्वस्तिनरुक्ता ॥ १५ ॥ ॐ अन्विदन् मत्तर्त्तमन्वासे
 स्यमिद्वेष्टा ॥ १६ ॥ ॐ ययः ॥ पृथिवीययडाषधाषुययादिब्रून्निद्रुययाथा
 ययः ॥ १७ ॥ ॐ विष्णुः ॥ नाराटमसि विष्णुः ॥ १८ ॥ ॐ विष्णुः ॥

नसि विष्णुः ॥ १९ ॥ ॐ अन्विदन् मत्तर्त्तमन्वासे ॥ २० ॥ ॐ अन्विदन् मत्तर्त्तमन्वासे
 दवगावन्नुमादवगावसवादेवगावुडादवगादिष्टादवगामुत्रगादवगाविष्टादवा
 दवगावदुस्यमिद्वेष्टादवगावन्नुमादवगावन्नुमादवगा ॥ २१ ॥ ॐ ओ ॥ १ ॥ नित्रन्निद्रु ॥ १ ॥
 निष्टु पृथिवी ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥
 नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥ नित्राष्ट ॥
 यजामहसुगन्धिपृष्टिवर्द्धनउर्वानूकमिववन्धनामृत्तामृदीयमामृतामृ
 दीयजामहसुगन्धिपृष्टिवर्द्धनउर्वानूकमिववन्धनादिष्टामृदीयमामृतामृ

ॐ निमित्तसूक्तनकादनादिमार्क ॥ ॥ यश्चात् ॥ निकादिर्कंददं ॥ निका
दनास्त्रिमयिनददं ॥ विष्णुदवायसर्वविक्रयदानं ॥ यथैतुक्तास्तस्वराजन
यार्थस्यजाग्रा ॥ विकलपिलुमिलादकां न विष्णुदववाक्त्रलज्जामेत् ॥ यित् यि
लुमिलादकां न यित् यद्वक्त्रलज्जामेत् ॥ ॥ मययजमाननकलानर्त
मार्कनी ॥ ॥ उंजूयाव्ममथूनामायाकाजीकानीज्वनिका । यूनीद्यागवगीऊ या
सर्कगाभाकदायकाभाप्रदहर्मिस्त्रियं ॥ उंयूनीस्ययविशालिग्राहकालेसदा
य० ॥ हर्मोलियेऊलेहमेऽयित् लीमाकदायका ॥ गन्धवन्दननलययं ॥ उं

सुगन्धिचन्दननेव उलजीवन्दननत्रागहूमोसिञ्जयद्यश्च यितृलाकस्यमाकृदाः
॥ गंगावाल्कालिलादीन्निषाया ॥ गिलकृत्तन ॥ ॐ गार्ग्यगोत्रमि, यितृयितुसर्त
स्रथा ॥ ॐ यिगास्रयितुसर्तस्रथा ॥ ॐ युयिगास्रयितुसर्तस्रथा ॥ ॐ सीक्तात्रही
नवालविकल यितुसर्तमयनिष्ठर्गा ॥ ॐ यितुयागासर्तमयनिष्ठर्गा ॥ वालकाया
मयप्रियीमवूर्णनलिखन् ॥ लाजकिंययन् ॥ ॥ सव्रानविकलयाणकुमाकृता
दिर्कधृत्वाविष्णुदवाद्यगकुन्त ॥ यजमानेन ॥ ॐ दधिरकं ॥ विष्णुदववाकृत्तन
॥ ॐ सूरकं ॥ कुम्भकमगायन ॥ ॥ अथसव्रानयजमानेन गिलकृत्तधृत्वायितृय

ॐ निलरक्तं ॥ वाक्कलना ॥ ॐ सुरक्तं ॥ निलकृशमात्रं ॥ ॥ यजमानं नस्वबाभजा
 नृसमो निष्कयविकलपिण्डं धृत्वा यत् ॥ ॐ यज्जिष्वात्मा यज्जन्निष्वात्मा मरु
 दिवश्च स्वयामादयन् ॥ न स्यश्च जगत्सु नीतिमती ॥ यथावर्जनी त्वकल्याणि ॥
 ॐ पितृर्वीर्यमृताय च ॥ मातृर्वीर्यमृताय च ॥ पुत्रं पुत्रं वीर्यं नृणां यथा नृणां वीर्यं वा २९
 मृता ॥ यमकललपिण्डं धृत्वा यज्जिष्वात्मा यज्जन्निष्वात्मा मरु
 दिवश्च स्वयामादयन् ॥ न स्यश्च जगत्सु नीतिमती ॥ यथावर्जनी त्वकल्याणि ॥
 ॐ पितृर्वीर्यमृताय च ॥ मातृर्वीर्यमृताय च ॥ पुत्रं पुत्रं वीर्यं नृणां यथा नृणां वीर्यं वा

यमयतिष्ठती ॥ निलादकंददं ॥ ॐ सीस्कानदीनवालविकलपिण्डं कृत्य किला
 दकार्यमयतिष्ठती ॥ विष्णुदवया नासिचकं ॥ जगद्वाकृत ॥ वन्दनयज्ञाय वी
 तयुष्यरुलराजन धूय दीयं ददं ॥ कल्लिखत्तनकावतया ॥ ॐ सीस्कानदीन
 वालविकलपिण्डं कृत्य कृत्य रुदं रुलपुष्पागामून धूय दीयने वंश्यादि संकल्पमय
 तिष्ठती ॥ ॐ ॥ ॐ विकलादान रुलसीयाकमस्तु ॥ ॐ विकलाहं सुपीता वत्र
 दातवन्तु ॥ ॐ अग्निदग्धा यज्जीवा यथा दग्धा ॥ कल्लिखत्तनकावतया ॥ ॐ सीस्कानदीन
 वालविकलपिण्डं कृत्य कृत्य रुदं रुलपुष्पागामून धूय दीयने वंश्यादि संकल्पमय

चैविधियत्रियुर्मसु॥ कृष्णगुलिविकलविलुनिद्विधा॥ रुक्म्यदात्या॥ उयस्य
 र्जनी॥ ॥ विलुयागारुदली॥ गाययात्यास॥ विलुयायशुदली॥ गाययाति
 लुयायुजयन्॥ विलुयायकृष्णगुलितं गंमजुलनिमय॥ वामकयलविलुया
 युधत्वाकामनयापूर्वशिमुखननमस्तुत्या॥ ॐ ह्रद० रुविश्यजननीमजुद ३०
 सवीत्र० सर्वगत० ससुया॥ आत्मासतिप्रजासतिप्रसुतिलाकसन्तरायसति
 अग्नि० प्रजावदुलीमकत्रालनययात्रा॥ अस्मासुधर॥ ॐ गुरासर्वेषां बान्ध
 वादीनीसर्वदाकल्यालदीर्घमायुवमु॥ ॥ अयस्यनवाक्रसाययजमा

नावूयागा॥ ॐ ह्रद० रु॥ वाक्रलाना॥ ॐ ह्रद० रु॥ यजमाननना॥ उविद्ये रजादि
 युवितामवलाकयन्॥ ॐ गायमनीकिं कर्तव्यं॥ वाक्रलाना॥ ॐ ह्रद० रु॥ राइ
 गी॥ उविष्ठात्रीविलुयायनिद्विधा॥ भालदूयमात्र॥ कीत्रालुविमर्जनी॥
 कर्गन॥ ॐ उद्वयन्मसुयनिसुययानि वृत्तं दर्वदवशासुयमगमगुक्रानि
 वृत्तं॥ नत्रविमर्काय॥ ॥ यजनानन॥ ॐ ह्रद० रु॥ वाक्रलाना॥ ॐ ह्रद० रु॥
 ॥ यजमाननविलुयायस्य॥ ॐ अत्रअमृकृष्णगुलि॥ कीत्रसर्विष्टसमन्ति
 दधिमधुनिलसंयुक्तमहाद्रामिलुसमृद्वं॥ यजमानननिलकृष्णजलमादाय॥

ॐ गमर्षणगुणि चित् यिगामस्तु ययिगामस्तु यिलु दानमस्तु कविश्रावाद्मालना ॐ क
 नूष ॥ ययाया इजसा नुगम्य कायाव सिजलरा यासरा ॥ ॥ यजमानतचिपुं वि
 रागं कृत्वा ॥ कृत्वा ॥ ॐ यिगामस्तु यिलु रागं स्वया ॥ ॐ यिगामस्तु यिलु रागं स्वया ॥ ॐ ययि
 गामस्तु यिलु रागं स्वया ॥ नय्यरागं गृहीत्वा ॥ ॐ ध्रुवमर्दत्वा नृदयमन ॥ ॐ दमूयया
 मगृहीतासीत्यायत्वा इष्टं गृह्णात्यथ तथानि निन्दायत्वा इष्टममस्तु ॥ ॐ अथादि ॥
 ॐ गमर्षणगुणि चित् यययानामस्तु लज्जामस्तु यिलुं गमस्तु ॥ ॐ अष्टवस्तु यिलु ॥
 सूक्तं ॥ यूनर्दिगा यरागं गृहीत्वा ॥ ॐ अष्टवस्तु यिलुं गमस्तु ॥ ॐ दमूयया मगृही

गासीन्दायत्वाइहृंगकाभ्यषमय्यानित्रिन्दायत्वाइहृंगमम्॥ॐअद्यादि॥ॐगर्गमपुति.यिगा
मरुयथामनामगर्मेलनगरुयिःॐगर्मोस्व॥ॐउकादशत्रुदयिलु४सूत्र्य॥गर्गीयसार्गमरी
त्वा॥ॐयथिविसदंत्वात्तत्रिदसन्त्यवसदन्नाकसुदमययामगृहीगासीन्दायत्वाइहृंगका
भ्यषमय्यानित्रिन्दायत्वाइहृंगमम्॥ॐअद्यादि॥ॐगर्गमपुति.युयिगामरुयथामनामग
र्मेलनगरुयिःॐगर्मोस्व॥ॐउकादशत्रुदयिलु४सूत्र्य॥रुसुयुकात्ययिलुसार्गकात्रय
॥ॐयिगयिलुसार्गस्व॥ॐयिगामरुयिलुसार्गस्व॥ॐयुयिगामरुयिलुसार्गस्व॥
विगस्तिनायिलुस्यर्जनं॥ॐअगुयितयाप्रादयययथसरागमावृषायय॥रुसुनरुसोसोम

नी॥ उँ अमीमदनं॥ विगत्रायथाशागामावषाधिषट्॥ ॥ यूर्वाशिमूर्धनयूर्वाक्षिरागुँ त
 सक्तनमउनादवावसवक्रिदगासुगाशत्रयनमजसाहवित्रिदुवयादधूशाँ वसना
 यनमसुर्यगीष्मायवप्रदायव। वर्षात्रयत्रय। वरुमननिजिग्रायव॥ उँ वृषुयानम
 शाँ माससंवत्सत्रयानमशाँ अष्टवसुरयानमशाँ उँ नकादशत्रयानमशाँ उँ द्वादशमदिह्य ३२
 थानमशाँ विगृधितामरुयुगितामरुथानमशाँ ॥ तिलकृशरुसादकं गृहीत्वा॥ उँ ग
 र्भे। गशनि। विगृयथानामगर्मलविषुगिलादकार्यस्त्व॥ उँ विगामरुयथानामगर्म
 लविषुगिलादकार्यस्त्व॥ उँ पुविगामरुयथानामगर्मलविषुगिलादकार्यस्त्व॥ ग

विगृयद्वक्त्रलज्जामगा॥ ॥ यद्वायवीगददगा॥ उँ नमाव॥ विगत्रायसायनमाव॥
 विगत्र॥ ज्जामायनमाव॥ विगत्राडीवायनमाव॥ विगत्र॥ स्वभायेनमाव॥ विगत्रायात्रा
 यनमाव॥ विगत्रामन्यवनमाव॥ विगत्र॥ विगत्रानमावागृहान्न॥ विगत्रादफसगाव॥
 विगत्रादबीगद॥ विगत्रावासशाँ उँ विगृविषुयद्वायवीगवार्हस्त्व॥ उँ विगामरुवि
 षुयद्वायवीगवार्हस्त्व॥ उँ पुविगामरुविषुयद्वायवीगवार्हस्त्व॥ चन्दनी॥ उँ वि
 गृविषुचन्दनीस्त्व॥ उँ विगामरुविषुचन्दनीस्त्व॥ उँ पुविगामरुविषुचन्दनीस्त्व
 ॥ ज्जामदददगा॥ यूर्वा॥ उँ विगृयद्वक्त्रलज्जामगा॥ विगामरुयथानामगर्मलविषुगिलादकार्यस्त्व॥

[illegible][illegible]

नयायक रुलसीयाकममु॥ गाययूक नमाह लु पिलुयु दानय थ क रुलसीयाकम
मु॥ दाता प्रासादा न रुलसीयाकममु॥ क्रियाय प्रियूर्णममु॥ कालागी गवलामी
न तिर्दोषममु॥ यस्यादिर्दोषममु॥ उँ दवस विग ४ य सु व य रूप स व य रूप
पनिर्क मय दिवा ग न्य ४ क म य ४ क ग न ४ य न उ वा य स नि चो च न ४ स द नु स
४ उँ ग म र्ग म य नि पिलु ४ न वि स ग ल ४ वि स य प्रियूर्णममु॥ वि स ४ वा य ह
स न य ४ व ४ ल न मू र्वा उ ल ४ म ४ क र्वा म ॥ उँ स ४ दि ग म मु॥ उँ दी र्वा म य म मु॥ उँ जि
वा ज्ञा य ४ म मु॥ म ४ ल ४ ल ४ म ४ क र्वा म ॥ उँ दी र्वा य न् न ४ न ४ न ४ वि स ४ मि लि

पदानिवा नवचायूष्यसिंघान दीर्घमायूष्यवायूयाम् ॥ ॐ अयमीमं विष्णुं ददातु
 चर्मयूष्यनिलिङ्गाश्वाक्षलास्यकन्यास्तारिवा आयासवकुल ॥ अग्निविष्णुदवति
 एयकादिजलस्यजीदाययम् ॥ ॐ निवा आयासकुल ॥ ३॥ ॥ विष्णुदववाक्षलाह
 स्ययूष्यदद्यात् ॥ ॐ लक्ष्मीर्चसतिपूष्यय लक्ष्मीर्चसतिपूष्यय लक्ष्मीर्चसतिपूष्यय
 ४ सोमनस्यसदाशुम् ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ ॐ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय
 अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय
 ५ ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय ॥ अशुर्चसतिपूष्यय

मदीयममु॥ अथ सद्यः नमिलकुलादकीवाभ्रलदहदशाग॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा
महानीदहमन्नमदकमदीयममु॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
षामन्नमदकमदीयममु॥ ॐ अथात्रा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
युर्विजियुष्ययदानी॥ ॐ अथात्रा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
लक्ष्मीसुकुलिसंगानवृद्धिः कु॥ अथ सद्यः नमिलकुलादकीवाभ्रलदहदशाग॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा
नमः॥ ॐ दारात्रा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
यैवनामु॥ अथ सद्यः नमिलकुलादकीवाभ्रलदहदशाग॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा

३५

मायया विष्णुकश्चन॥ अथात्रा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
लनालिसद्यतमयसद्यः न॥ ॐ अथात्रा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
वयागुक्तिनयविर्गयि॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
यिष्वावागर्गा॥ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
गामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
गुक्तिनयविर्गयि॥ ॐ विरयिगामरुप्रविगा॥ ॐ यथासुदिहं न
नाकात्रयग॥ ॐ यथासुदिहं न

विनामहयिलुहिनयुष्येकमृहीत्वायत्तोसमर्थयम् ॥ उँ आधरुयिगगार्कैकूमा
 त्रैयुष्यजमुडी ॥ विनामहयिलुहिनयुष्येनिधाय ॥ उँ यथेदयुत्रधासम् ॥ जयसर्वानरु
 मादकदानं ॥ उँ यित विनामहयुयिनामहयिलुह्याहमादकार्यमदीयंरुकि
 त्रकुस्वभा ॥ यिलुयागदकदानं ॥ उँ उँ उँ वरुकित्रमृगीद्युगीययःकीलालयत्रि ३४
 गी ॥ स्वभास्तुगर्थयतमंयितुन ॥ उँ यित विनामहयुयिनामहयिलुह्यागद
 कार्यस्वभा ॥ यिलुयागमममृवीरुया ॥ यिलुह्यागीगदकदानं ॥ उँ यित विना
 महयुयिनामहयिलुह्यागीगदकार्यमदीयंरुकित्रकुस्वभा ॥ खड्गयगममम

मृवीरुया ॥ ॥ यागयुधली ॥ उँ कानंयार्गकुत्वा ॥ यथायुद्धादकिल्लदानं
 दद्यात् ॥ उँ विष्णुयादवस्थावे श्वाननदवस्था ॥ यिलुदानकृगयुनिधाययथायु
 द्धादकिल्लदानंउद्यमहंसैयुदद ॥ स्वस्ति ॥ यिलुदकिल्लनिधाय ॥ उँ यित विना
 महयुयिनामहयुहसैकाजहीनवानविकलयिलुह्यादकिल्लयुद्यमहंसैयुदद
 यितयद्वुक्ताय अगिथितिलिहि आवायगदायनदव उगदकिल्लदद्या
 त् ॥ कर्तनं ॥ उँ यथायुद्धावृत्तविधे अगुगीययुष्यधूयदीयतत्सर्वविधियत्रि
 पूर्णमस्तु ॥ वाचनी ॥ उँ स्वस्तिरावकावृतास्ति ॥ नऊलमयसश्चनयिलुनिधाय ॥

॥ गंगा गवाक्षेन ॥ सखानयुक्ता शिखरेन गवाक्षेन कुर्यात् ॥ ॐ कथिलादियं वरुणमात
 काय ॐ दमासन नमः ॥ यूर्यं नमः ॥ ॐ ॐ देवताय ॐ दमासन नमः ॥ यूर्यं
 नमः ॥ ॐ वहिर्वाजी गति ॐ दमासन नमः ॥ यूर्यं नमः ॥ वृत्तवर्धन आवाह
 न अर्घ्यचन्दन यज्ञाय वीत यूर्यं रुलराजं नमः ॥ दीपं तिस्रया ॥ कलेश्व
 रं नमः ॥ ॐ ॐ दी ॐ लयूर्यं ताम्बूय दीपं नैवेद्यादिसंकल्प सिद्धि यमु
 ॥ मधुलीकाय ॥ मातृकाय ॥ कञ्जानकं ॥ ॐ गव नमः ॥ ॐ वन्दिता सितवर्जि
 त विष्णुमिथुं लज्जुना ॥ कथिलाह प्रमथार्य ॥ यन्मया इष्टुं कर्तुं ॥ गवाममाय

३०

गानित्यं गवः पृष्ठं उददिम ॥ गवामदयं चाधि गवीमध्वं वसामग्रद ॥ सोमशयिजग
 मात देवानाममृतयुध ॥ ॐ दं गवः गललं वृत्तं मवृत्तमूर्ध्नि ॥ गललवन्दं गवः
 मियुगार्थं उददिम ॥ अमृतमथनात्यन्ता सुखशाला कथानिली ॥ गवां गवः यथा मम
 तया सोमवरास्यव ॥ उल्लभं गललं दृष्टं किं तु मर्त्यं यथा कथं ॥ सर्वलोकाधना
 हतो जीविगान्नयुदायिनः ॥ गवः गललं दृष्टं यमु नमः मवृत्तमूर्ध्नि ॥ नित्यं यत्र
 गवः दद्यात् ॥ इति त्वा इति रावर्ग ॥ नमः निवरायात्याना ॥ तस्य नयायनाशनं ॥ नमः
 नमः ॥ उदयनं लुगिसन्ध्या नियतं ॥ उदयं विमूकं ॥ सर्वयायत्यं ॥ गिवलाकं सगच्छ

नि। अयू र्दक्षि धर्न दक्षि। यूनान्दक्षि। येवत्राययुयुष्टि। ग्रियं दक्षि। साग्यं दक्षि। गवे
तमः॥ ॐ नमो वसुधैव कुटुम्बकम्। गवाक्षलक्षिताय च। उगद्विनायकस्य। गवि
न्दाय नमो नमः॥ ॐ हृदय नमः सुखं कुलं देव नमो नमः। स्कानं देव गुरु। हसन्
युज्जगद्गनमा मुने॥ यथा बालं युक्तं बालं। कवचं रावति वायली। गगुदेव विद्या ३८
गानां। गानिर्देवति वायली॥ ॐ गार्ग्यं गार्ग्यं गार्ग्यं। गवाक्षं न वि। यतस्सर्वं विधियत्रि
युर्लमसु॥ मलुलसु युयुलसु वली॥ गवेदक्षि। लां ददन्॥ ॐ कपिलादियं च। गम
माहृष्टादक्षि। लां तुल्यमहं संयुदद॥ ॐ गवाक्षं न॥ ॥ वि। ग्वदवयागं वाचन

उलनयूनयन् ॥ ॐ अग्निः ॥ यागं विष्णवे दत्तवान् वेष्मन् प्रदत्तवान् सुप्रियन्तामिनिबूयात् ॥
 ॥ विष्णवे दत्तवान् कालाय ऊमानां शिष्यैर्कृत्वा ॥ ॐ यदि ह्यसि महीरागा ॥ सर्वमीधं
 वग्महि नाशवाक्कलस्य क प्रतिह्यं गायंति जसिधायनयन् ॥ ॐ देवस्य त्वास ॥ ॐ स्वस्ति
 नः ॥ ॐ ॥ वन्दनी ॥ ॐ यदद्य कच ॥ आशीर्वादं ॥ ॐ आयूर्ध्वं लं विपूलममुं सुखं प्रिया
 मुं आराग्यकामवसूयागवकीर्तिनमुं ॥ श्रीनमु धर्ममतिनमु प्रियकृयामु सं
 गातवृद्धिमतावीक्षितसिद्धिनमु ॥ ॐ सिद्धिनमु क्रियाप्रभुं वृद्धिनमु धनायूषाय
 हिनमु सन्निप्रभुं ॥ श्रीकीर्तिनमु गुरुं गवा ॥ ॐ सर्वविघ्नप्रसमनं सर्वशान्तिकरं गुरुं ॥ आ

यः पूर्णतः कामः लक्ष्मीयुहि विवर्द्धनं ॥ सिंधुमूढ विया ॥ उं श्रीधर्मलक्ष्मी ॥ उं वृक्षल
 स्यग ॥ उं ॐ द ० रु वि ॥ पुरा सर्वेषां वाच्यवादीनां सर्वदा कल्याण दीर्घमायुः प्रभु ॥
 ॐ स्वाजीर्वादी ॥ ॥ अगुमलुलीकलाकार्यक यो ग ॥ मालकास्यकजाते ॥ उं माताम
 दा न किमर्थेति न स्य यिगा यिगा न स्य यिगा मरुलू विष्णु धंदवाश्च यत्र मा ४ यया नु ३२
 न किं पुनर्लभ्यते यथा लब्धनाशायकं च प्रादुर्भासमस्तु कर्त्तारो काव्यात्मा रुमिनी
 चार्क ॥ न त्सन्निधानदयया नु स्यात् न कलुषा लब्धसुखाश्च सर्वे ॥ यिगा यिगा म
 रुयेव ताथेव ययिगा मरुहा न किं पुनया नु विष्णु नमयादरुनरुगल ॥ यिगा यव

[illegible]

वाक्कलजाति. ज्ञायात्र सिद्धिस्तान विद्य ॥ ॥ सूर्यसाकि ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया
 प्रद्व. कर्तृनिर्णयमागतवा. मार्कण्डेयः ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया. साकिरुतस्त्वमेव हि ॥ कर्तृ
 न ॥ ॐ यिन्मया प्रद्वया. कर्तृनिर्णयमागतवा. मार्कण्डेयः ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया. साकिरुतस्त्वमेव हि ॥ कर्तृ
 कात्वीयत्रमन्वना ॥ ॐ कर्तृनिर्णयमागतवा. मार्कण्डेयः ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया. साकिरुतस्त्वमेव हि ॥ कर्तृ
 ज्यसवान्विष्णुयनिस्त्रिगयविगुद्विगुलकृष्णदिवाक्कललहसुसमर्पयन्मात्र
 नार्थ ॥ ॐ वाङ्कवाङ्कवदवाङ्किनीनाथनैषु विद्याज्जगतामृतकृष्णजस्यमधु
 विद्यतमादयस्यैव न फायागययिर्दिद्वयानेश ॥ दयदीयवृत्तिवैकैककृष्ण ॥ ॐ

४०

विष्णुदत्तवैष्णवप्रदवसुसंनिधानमस्तु ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया. साकिरुतस्त्वमेव हि ॥ कर्तृ
 च ॥ ॐ यन्मया प्रद्वया. साकिरुतस्त्वमेव हि ॥ कर्तृ
 स्वस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ज्यसवान्विष्णुयनिस्त्रिगयविगुद्विगुलकृष्णदिवाक्कललहसुसमर्पयन्मात्र
 हा ॥ स्वर्गलोकविष्णुलोकनिबलोकसंस्थापारवदु ॥ ॐ सैस्त्वानवाप्तारवदु ॥ कर्तृ
 यिषु ॥ स्वस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ॥ सर्वोक्तिश्चकयागुनिष्ठायकलकस्त्वनेक्रियत
 ॥ यजुमानीवृयान् ॥ ॐ यिषुमस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ॐ यिषुमस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ॐ
 ॐ नृदहीत्वा यिषुयागुनिष्ठाय य ॥ ॐ सैस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ॐ सैस्त्वानवाप्तारवदु ॥ ॐ

[illegible]

मूलमन्त्रवायस्यगीर्वाणं स्वस्ति नमो नृणां दृष्टवास्तस्मिन् यथा विश्वं ददाति स्वस्ति न
 हायैकाग्रनिष्ठं नमिस्तस्मिन् नमो नृणां दृष्टवास्तस्मिन् यथा विश्वं ददाति स्वस्ति न
 यादिवत्कविद्वययाथाययः स्वगीयुगिसमस्तु मर्क ॥ ॐ विश्वं प्रजापतसि विष्णु
 ऋतं कुक्का विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः प्रजापतसि विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः
 मादयास्तुर्थादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमा
 दवगाविष्णुदवावगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमादवगावन्तमा
 कविद्वययाथाययः स्वगीयुगिसमस्तु मर्क ॥ ॐ विश्वं प्रजापतसि विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः स्वस्ति नमि विष्णुः

नमो विनायकाय ॥ गसर्वरुकिमाया निरुमोदरु निहार ॥ गाराउर्वीस कं चउद
 वनत ॥ भवलीखन लयावकाय ॥ मलुलनपिहावयाव ॥ जदिमक कंगन ॥ उं
 श्रीसूर्यमयूर्यनमः ॥ उं ॐ हृदवतायेयूर्यनमः ॥ उं गरुलश्रेयूर्यनमः ॥ उं
 चित्पिगामहयुपिगामहा ॥ स्युगामवत्रदाहवकु ॥ उं गरुहृदयसापदाऊ ॥ ४३
 गायत्रुमैवगायलिहृष्टुन्दसस्युगामवत्रदाहवकु ॥ चित्पयार्गरीहीत्वा
 नद्यां चित्पुषवाहयत् ॥ भवति स साक आर्द्धाङ्ग ॥ जल्लिखया ॥ सद्ययादावकु
 वया ॥ ॥ ॐ निवधाय विवाहलस्ययाकप्रद्विपिरसमाय ॥ ॥ श्वर्यवद

७२

वियद्वसोसमिगतमाससिगत्रेयक लेखञ्जदिवस ॥ हमीनिधियुगयुध्यासनालीदुर्ग
 ॥ याकथाहमिदमूदाचिदिवदयुर्वेसृगानीधुर्वत्तदवादिजयवर्गकनञ्जि श्री
 गमुसंवाशलिखता ॥ १ सन्वत् ८० ४ वेगुलुङ्ग अहमीलुक्तावथकद्रुसनिद्रव
 नाग्रुद्विजयादेवर्गकनलवाकन चित्पययकविमिरितनकसंपूर्णयाद
 वायधूनकाशया ॥ भवतलसयत्रयाकागवाडिकतिवुड ॥ यिदहतात्रवव ॥

॥ उं वासुदेवोवासा ॥ ॥ उं वासुदेवोवासा ॥ ॥ उं वासुदेवोवासा ॥ ॥ उं वासुदेवोवासा ॥ ॥

हे का भानी हे कमल कनति पाउ जाग्यो सारति हो रेह लको पन

ॐ सिव को गो म रे रे रे

२ श्री गणेशाय नमः नमस्तु वाग्मती देवी सर्वदुःख नासनाम्बु भ
मूलितं वायं तदस्तीति चिन्ता कृतं ॥ १ ॥

ASHA ARCHIVES 3719